॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री सत्यनारायण जी की आरती

परंपरागत

जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन-पातक-हरणा॥

रत्न जड़ित सिंहासन, अद्भुत छवि राजै।
नारद करत निराजन, घंटा ध्वनि बाजै॥
॥ जय लक्ष्मी रमणा स्वामी... ॥

प्रकट भये कलि कारण, द्विज को दरस दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बनकर, कंचन महल कियो॥
॥ जय लक्ष्मी रमणा स्वामी... ॥

दुर्बल भील कठारो, जिन पर कृपा करी।
चंद्रचूड़ एक राजा, जिनकी बिपति हरी॥
॥ जय लक्ष्मी रमणा स्वामी... ॥

वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर स्तुति कीन्हीं॥
॥ जय लक्ष्मी रमणा स्वामी... ॥

भाव-भक्ति के कारण, छिन-छिन रूप धर्यो।
श्रद्धा धारण कीन्हीं, तिनको काज सर्यो॥
॥ जय लक्ष्मी रमणा स्वामी... ॥

ग्वाल-बाल संग राजा, बन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हों, दीनदयाल हरी॥
॥ जय लक्ष्मी रमणा स्वामी... ॥

चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा।
धूप-दीप-तुलसी से, राजी सत्यदेवा॥
॥ जय लक्ष्मी रमणा स्वामी… ॥

श्री सत्यनारायणजी की आरती, जो कोई नर गावै।
तन-मन-सुख-संपत्ति, मनवांछित फल पावै॥
॥ जय लक्ष्मी रमणा स्वामी… ॥

॥ बोलो भगवान सत्यनारायण (विष्णु) की जय ॥